

**राज्यपाल ने साहित्यगंधा सम्मान समारोह में 11 विभूतियों को सम्मानित किया**  
**कलमगीरों की कलम को तलवार से श्रेष्ठ माना जाता है-श्री नाईक**

लखनऊ: 11 नवम्बर, 2018

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक ने आज गोमतीनगर के होटल जेनेक्स में आयोजित साहित्यगंधा सम्मान समारोह - 2018 के अवसर पर 11 साहित्यकारों को अंगवस्त्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। साहित्यगंधा सम्मान का आयोजन महाकवि गुलाब खण्डेलवाल की स्मृति में किया गया था। इस अवसर पर वरिष्ठ साहित्यकार डा0 उदय प्रताप सिंह, कंवर बेचैन, श्री मुकुल महान, समीर शेख, अभय सिंह निर्भीक व अन्य ख्याति प्राप्त साहित्यकार उपस्थित थे। समारोह में विदश से आये स्वर्गीय गुलाब खण्डेलवाल के पुत्र श्री शरद खण्डेलवाल ने राज्यपाल को अपने पिता की कृति भेंट की। कार्यक्रम का आयोजन साहित्यगंधा के मुख्य संपादक श्री सर्वेश अस्थाना द्वारा किया गया।

समारोह में अनवरतगंधा सम्मान श्री कृष्ण मित्र, गीतगंधा सम्मान डा0 सुरेश, गजलगंधा सम्मान डा0 कलीम कैसर, लोकगंधा सम्मान श्री सदाशिव त्रिवेदी, ओजगंधा सम्मान श्री मदन मोहन समर, कथागंधा सम्मान श्री संजीव जायसवाल संजय, व्यंग्यगंधा सम्मान श्रीमती इन्द्रजीत कौर, बाल साहित्यगंधा सम्मान श्री सत्य नारायण सत्य, पत्र-साहित्यगंधा सम्मान श्री संतोष बाल्मीकि, युवागंधा सम्मान डा0 रुचि चतुर्वेदी, चित्रगंधा सम्मान श्री हरिमोहन वाजपेयी 'माधव' को दिया गया।

राज्यपाल ने साहित्यकारों को सभा में बोलते हुए कहा कि 'श्री सर्वेश अस्थाना मूलतः एक कवि हैं। कवि को बोलने की आजादी होती है क्योंकि जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि। साहित्यगंधा परिवार द्वारा साहित्य की विभिन्न विधाओं के लिए 11 विभूतियों को सम्मानित किया गया है। सम्मान के श्रंखला में आत्मकथा गंधा सम्मान जोड़ देते तो क्या पता वह सम्मान मुझे मिल जाता।' इस पर आयोजकों ने तत्काल अमल करते हुए राज्यपाल की पुस्तक 'चरैवेति!चरैवेति!!' को भी सम्मानित करने का निर्णय लिया और वरिष्ठ साहित्यकार डा0 उदय प्रताप सिंह द्वारा राज्यपाल का भी सम्मान अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह देकर किया गया।

श्री नाईक ने कहा कि साहित्य सेवा बड़ी सेवा है, क्योंकि साहित्य के बिना समाज अधूरा है। एक साहित्यकार संवेदनशील होकर महसूस करता है फिर शब्दों के माध्यम से अपना भाव प्रदर्शित करता है, जिसका समाज पर व्यापक असर भी होता है। स्वतंत्रता प्राप्त करने का सबसे बड़ा हथियार साहित्य और पत्रकारिता रहा है। इस लिए कलमगीरों की कलम को तलवार से श्रेष्ठ माना जाता है। कलम की ताकत अद्वितीय होती है, जो समाज पर व्यापक असर डालती है। हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा है, इसकी उन्नति ही हमारी राष्ट्रीय पहचान है। भाषाएं एक दूसरे को जोड़ने का माध्यम होती हैं। उन्होंने कहा कि आत्मा और शरीर का जो संबंध है वही संबंध साहित्य और समाज का है।

राज्यपाल ने इस अवसर पर प्रख्यात मराठी व्यंग्यकार एवं साहित्यकार पद्म भूषण प्रो० पी०एल० देशपांडे को याद करते हुए कहा कि प्रोफेसर देशपांडे ने लिखा था कि 'कल अगर मेरी प्रतिमा स्थापित करना तय हुआ तो उसके नीचे केवल इतना लिखिए कि इस व्यक्ति ने हमें हंसाया है।' उन्होंने इस अवसर पर अपनी पुस्तक 'चरेवैति!चरेवैति!!' की यात्रा बताते हुए कहा कि वास्तव में वे एक 'एक्सीडेंटल लेखक हैं,' जिन्होंने इससे पहले कभी कोई पुस्तक नहीं लिखी।

समारोह में श्री अनिल टेकरीवाल, सर्वेश अस्थाना ने भी अपने विचार रखे तथा धन्यवाद ज्ञापन हिन्दी के वरिष्ठ साहित्यकार डा० उदय प्रताप सिंह द्वारा दिया गया।

-----

अंजुम/दिलशाद/राजभवन (440/21)



